Impact Factor – 6.261

ISSN – 2348-7143

Arts Science & Commerce College Naldurg

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

January -February-March-2019

Vol. – V, Issue-I (A)

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar.
Assist. Prof. (Marathi)
MGV'S Arts & Commerce College,
Yeola, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editors :
Prof. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)
Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)
Mrs. Bharati Sonawane-Nile, Bhusawal (Marathi)
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

This Journal is indexed in :
- University Grants Commission (UGC)
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

Scanned with Ca

Impact Factor – 6.261

ISSN – 2348-7143

Arts Science & Commerce College Naldurg

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

January-February-March-2019

Vol. – V, Issue-I (A)

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar.
Assist. Prof. (Marathi)
MGV'S Arts & Commerce College,
Yeola, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editors :
Prof. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)
Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)
Mrs. Bharati Sonawane-Nile, Bhusawal (Marathi)
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS

For Details Visit To : www.researchjourney.net

© All rights reserved with the authors & publisher

Price : Rs. 800/-

Scanned with CamScanner

Arts Science & Commerce College Naldurg

30	Indian Ethos in Domestic Violence in Dongraplyad by Shivajirao Thombare **Dr. Dnyandeo Kale**	129
31	The Cultural traits in Gopinath Mohanty's Paraja **Dr. Shivraj Mangnale**	132
32	Depiction of Bhilla Tribal Culture in Arun Joshi's *The Strange Case of Billy Biswas* **Mr. Mannaa Yahya Ali Al-Saeedi & Dr Rajpalsingh Chikhalikar**	134
33	Social and Cultural Ethos of Jarawa Tribe in Pankaj Saksharia's 'The Last Wave' **Dr. Rajpalsingh Chikhalikar & Madhav Waghmare**	137
34	Cultural Challenges of Teaching English in Iran **Fariba Jafari**	141
35	Dusklands (The Vietnam Project) : Search for Order in Chaos **Mohammed Ahmeduddin & Syed Zahir Abbas**	149
36	Economic Development in the Akole Tahsil of Ahmednagar District (Maharashtra), India **Dr. Jalindar Darade**	154
37	Use of Narrative Technique and Language to Reflect the World of Carribean Reality in George Lamming's *In the Castle of My Skin* **Dr. Vikas Raskar**	160
38	Population Characteristics of Rahuri Tahsil **Dr. Jalindar Darade**	166
39	Women Represent the Church **Vishwas Valvi**	177
40	आमजन कि पीडा के ताप को महसुसती कविता **विपिन कुमार शर्मा**	184
41	देवेष ठाकूर लिखित गुरुकुल जीवन मुल्य **प्रा.पोपट जाधव**	190
42	इक्कीसवी सदी का आदिवासी हिंदी नाटक : 'डिडगर ईपिल' **डॉ.शशिकांत सोनवणे**	193
43	जैनेन्द्र कुमार कि कहानी 'खेल' में बाल प्रेम **श्रवण चिहार**	199
44	मध्यमवर्ग तथा निम्न वर्ग कि खायी में धरती धन न अपना **डॉ.अनिल साळुंखे**	202
45	आधुनिक समय में गांधी के राजनीतिक दर्शन कि सार्थकता **कविता**	206
46	वर्तमान युग में हिंदी साहित्य के भक्तीकाव्य कि प्रासंगिकता **डॉ. हुकुमचंद जाधव**	212
47	विज्ञापन क्षेत्र में रोजगार के अवसर **डॉ.उत्तम थोरात**	216
48	'ऊँची उड़ान' नाटक के चरित्र संयोजन में सांस्कृतिक मूल्य-बोध **डॉ.कामायनी सुर्वे**	219
49	विद्यार्थी जीवन में भगवद्गीता की उपयोगिता **राहुल**	226
50	मोहन राकेश के साहित्य में मनोविज्ञान एक अध्ययन **श्री सूर्यकांत आमलपुरे**	229
51	शिवप्रसाद सिंह के उपन्यासो में ग्रामीण जीवन का चित्रण **डॉ.राजेंद्र बाविस्कर**	232
52	धम्मलिपि **डॉ. जितेन्द्र तागडे**	236
53	हिंदी सिनेमा के लोकगीत **प्रा.आश्विनी परांजपे**	240
54	हिंदी नाटक का बदलता स्वरूप **प्रा.शुभांगी खुडे**	243
55	आठवे दशक के हिंदी ऑचलिक उपन्यासो में संस्कृतिक परिवेश **डॉ.अनिल साळुंखे**	247
56	प्राचीनकालीन, मध्यकालीन भारत में स्थानिक शासन **डॉ.पद्माकर दारोंडे**	251
57	सुषम बेदी कृत उपन्यास मोरचे में नारी संघर्ष **अनिता देवी**	255
58	आचार्यत्व कि परंम्परा और केशव का आचार्यत्व **डॉ.मुकेश कुमार**	259
59	हिंदी भाषा ओर भाषिक कौशल **प्रा.दिलीप बच्छाव**	263
60	अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा साहित्य में धार्मिक सहिष्णुता **अनिता रानी**	265
61	वैश्वीकरण के परीप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा कि अवधारणा एव स्वरूप **डॉ.एस.डी.पाटील**	269
62	वैश्विक परिदृश्य में हिंदी भाषा प्रचार –प्रसार में डॉ. महेशचंद्र दिवाकरजी : एक दृष्टिक्षेप **डॉ. हाशमबेग मिर्झा, सुदाम पाटील**	272
63	मधुकर सिंह के उपन्यासो में दलित चेतना **डॉ. भारत खिलारे**	275
64	तुलनात्मक दृष्टी से निराला और मुक्तिबोध के काव्य में समानता **डॉ. ओमप्रकाश झवर**	280
65	समकालीन कविता में प्रकृती का आलंकारिक रूप **प्रा. शांताराम डफळ**	284

Scanned with Ca

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
UGC Approved Journal
Multidisciplinary Issue
Vol. - V, Issue-I(A)
ISSN : 2348-7143
Jan-Feb-March 2019

Arts Science & Commerce College Naldurg

वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी भाषा प्रचार - प्रसार में डॉ. महेशचंद्र दिवाकरजी : एक दृष्टिक्षेप

डॉ. हाशमबेग मिर्झा, प्रा. पाटील सुदाम दौलत
कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय नळदूर्ग जि. उस्मानाबाद.

आधुनिक काल के हिन्दी साहित्य कारो की परंपरा में डॉ. महेशचंद्र दिवाकर जी का नाम बडे आदर के साथ लिया जाता है। हिन्दी भाषा के प्रचार - प्रसार में दिवाकर जीका योगदान बडा ही सराहनीय रहा है। आज हम देखते है कि आजादी की प्राप्ति के साथ - साथ राजनीतिक गुटबंदी के चलते हिन्दी भाषा भले ही भारत की राष्ट्रभाषा नही बन पायी इससे इसकी महत्ता किसी भी रूप में कम नही होती है। आजादी का समग्र संग्राम हिन्दी भाषा के माध्यम से प्रमुख रूप से लडा गया था वह चाहे समाचार पत्रो, पत्रिकाओं में प्रकाशित गद्य लेख हो अथवा देश भक्ति की गीति रचनाएँ, हिन्दी इन सबका प्रमुख माध्यम थी। यही कारण है कि आज भी हिन्दी संपूर्ण हिन्दुस्तान की सम्माननीय भाषा है। यह भारत के सभी हिन्दुओ, मुसलमानो, सिक्खो, ईसाइयो, पार्सियों, बौध्दो, जैनो आदि समग्र धर्माचार्यो की भाषा रही है। सर जार्ज ग्रियर्सन, डॉ. कामिल बुल्के, गार्सादतासी, इत्यादी विदेशी साहित्य कारोने हिन्दी के प्रति अपने अनुठे प्रेम का परिचय दिया है। यही कारण है कि आज हिन्दी ने वैश्विक स्तरपर अपनी विशिष्ट पहचान बनायी है। क्योंकि हिन्दी के अनेकशः रचनाकारों ने कालजयी कृतियों का सृजन कर विश्व वाङमय को संपन्न बनाया है।

आज हिन्दी भारत की सीमाओं को लांघकर अपना अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप ग्रहण कर चुकी है। हिन्दी ने अपनी उदारता, सरलता, सरसता, माधुर्य और अकृत्रिमता से समग्र विश्व को प्रभावित किया है श्री. रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' के शब्दों में हिन्दी संसार की श्रेष्ठ और समृध्द भाषाओ में से एक है। अनेक एशियायी और अफ्रीकी देशों ने हिन्दी को अंतर्राराष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया है। स्वाधीनता के बाद विदेशों के साथ भारत के जो राजनीतिक और सांस्कृतिक संबंध सदृढ हुए है और होते जा रहे है, उनसे भी हिन्दी को विश्व - आयाम मिला है।

हिन्दी साहित्य के इतिहास में सं. १०५० से पूर्व के बौध्द साहित्य को अगर छोड दिया जाए तो भी परवर्ती हिन्दी साहित्य में एक से एक महत्वपूर्ण कृति दृष्टिगोचर होती है। जिससे विश्व साहित्य को अपना अनूठा योगदान दिया है। जैसे की - पृथ्वीराज रासो - चंदवरदाई, आल्हाखंड - जगनिक, श्री रामचरित मानस- तुलसीदास, सूरसागर - सूरदास, पदमावत - मलिक मुहम्मद जायसी, बिहारी सतसई - बिहारीलाल, कामायनी - जयशंकर प्रसाद, राम की शक्तिपूजा - निराला आदि विश्व विख्यात महान ग्रंथो की भूमिका किसी से छुपी नही है।

हिन्दी भाषा का आधुनिक काल स्वर्णयुग के नाम से जाना जाता है। जिसमे भारतेन्दू हरिश्चंद्र, आचार्य महावीर प्रसाद व्दिवेदी, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, बालमुंकुदगुप्त, पं श्रध्दाराम फुल्लोरी, जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, सुभद्राकुमारी चौहान, महादेवी वर्मा, प्रदिप, प्रेमचंद, अज्ञेय आदि प्रतिभासंपन्न साहित्य कारो के नाम उल्लेखनीय है। हिन्दी के रचनाकारो की संख्या में विस्फोट हो चुका है। आज यहाँ हजारो की संख्या में भारत में ही हिन्दी भाषा एवं साहित्य के सेवी है। आज विश्व में ऐसा कोई देश नही है, जहाँ के अनेक साहित्यकार हिन्दी में सृजन नही कर रहे है। फलतः आज हिन्दी भारत की सीमाओं को लांघकर अपना अंतर्राराष्ट्रीय स्वरूप ग्रहण कर चुकी है। हिन्दी ने अपनी उदारता, सरलता, सरसता, माधुर्य और अकृत्रिमता से समग्र विश्व को प्रभावित किया है।

आज विश्व में हिन्दी विदेशो में जाकर रच - बस गयी। इनमें वेस्टइंडिज, सूरीनाम, मॉरीशस, फिजी, बर्मा आदि उल्लेखनीय है, अंग्रेजो व्दारा ले जाए गये भारतीय गिरमिटिया मजदूर, कुली, आदि अपने साथ रामायण, गीता आदि भारतीय धर्म ग्रंथो को ले गये। जिनके प्रति मन में उनकी असीम श्रध्दा के कारण वहां पीढी - दर पीढी हिन्दी का अस्तित्व कायम रहा। अपनी आजीविका की खोज में पहुँचे प्रवासी भारतीयों के कारण भी हिन्दी उन देशो में पहुँची। अमेरिका,

Scanned with Ca

Arts Science & Commerce College Naldurg

कॅनडा, चीन, रुस, जर्मनी, फ्रॉन्स, इग्लेंण्ड, जपान, इटली, नार्वे, स्वीडन, डेनमार्क ओर कुछ युरोपीय देशो में हिन्दी सहज रुप से चली गयी अंतर्राराष्ट्रीय संबंधो के कारण भी हिन्दी विश्व के अन्य अनेक देशो में पहुँच गयी।

हिन्दी की देवनागरी लिपि, विश्व की सर्वोत्तम वैज्ञानिक लिपि है। हिन्दी का शब्द भंडार अपरिमित है। यही नही, यह दूसरी देशी - विदेशी भाषाओ ओर बोलियों को सहज आत्मसात कर लेती है। आज हिन्दी न केवल संपूर्ण भारत की मातृभाषा है, अपितू प्रवासी भारतीयो की भाषा भी है ओर विश्व - भाषा बनने की आत्मशक्ति इसमें है। यही कारण है कि हिन्दी ने अंतर्राराष्ट्रीय समुदाय ओर अंतर्राराष्ट्रीय बाजार - दोनो में ही अपनी विशिष्ट महत्ता प्रतिपादित की है। विदेशी साहित्यकारों का हिन्दी प्रेम अनुकरणीय है ओर प्रशंसनीय भी। हिन्दी की लिपि देवनागरी है ओर प्रशंसनीय भी। हिन्दी की लिपि देवनागरी विश्व की सर्वोत्तम वैज्ञानिक लिपि है। हिन्दी का शब्द भंडार अपरिमित है। यही नही यह दूसरी देशी - विदेशी भाषाओ ओर बोलियो को सहज आत्मसात कर लेती है। यही कारण है कि यह सहज ही सीखी जा सकती है। इसके अपने सहज आकर्षन के कारण ही विदेशी विव्दान इसकी ओर आकर्षित होते है ओर हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास फ्रांस के प्रख्यात विव्दान 'गार्सा द तासी' ने लिखा। उनके मन में हिन्दी के प्रति गहरी अभिरुचि रही। अंग्रेजी के विव्दान साहित्यकार जॉन गिल क्राइस्ट ने अंग्रेजी काल में भारत में हिन्दी को बहुत प्रोत्साहित किया। इनके कारण हिन्दी विदेशो में भी पहुँची । इन्होने हिन्दी व अंग्रेजी में परस्पर कई ग्रंथो की रचना की। हिन्दी एक वटवृक्ष है इसमें बहुत सी भाषा ओ के शब्द इतने रच - बस गये है कि अब वह हिन्दी काही एक रूप लगते है। हिन्दी सभी जगह साहित्य और बोलचाल दोनो ही रुपो में व्याप्त है। ऐसी भव्य व सर्वग्राहय हिन्दी के विकास और प्रसार के लिए सोचना होगा -

"मंजिले हर तरफ होती है।
मगर रास्ते खुद तराशने पडते है।
प्रश्न उठाते है बवंडर जिंदगी मे,
उत्तर खुद तलाशने पडते है।।"
विकास के क्षितिज पर वही देदीप्यमान होता है;
जो वक्त की मांग के अनुसार अपने मे परिवर्तन कर पाता है।

हिन्दी भावो को इस प्रकार प्रकट करती है कि मानस पटल को अन्दर तक आंदोलित करते है ओर हृदय आल्हादित हो जाता है। हिन्दी भाषा के अनुयायी स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी ने एक समय अपना वक्तव्य संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी में दिया था। हिन्दी को विश्वस्तर पर लोकप्रिय बनाने में विदेशी विव्दानो काफी योगदान रहा है।

महेश दिवाकर जी ने अपनी विदेश यात्राओमें हमेशा हिन्दी भाषा के प्रचार - प्रसार में बहुत सराहनीय प्रयास किया है। उनका कहना है कि चीन भारत का पडोसी देश है। भलेही कुछ तात्वीक विवाद है लेकिन फिर भी यहाँ पर हिन्दी पढने वालो की अच्छी संख्या है। चीन के पेडूचिंग विश्वविद्यालय, बीजिंग विश्वविद्यालय, सनधन विश्वविद्यालय में प्रमुख रुप से हिन्दी की शिक्षा दी जाती है। यही नही चीन के अंतर्राराष्ट्रीय रेडियो ओर दूरदर्शन के हिन्दी विभाग ने भी हिन्दी के प्रचार - प्रसार में महत्तपूर्ण योगदान दिया है। महेश दिवाकर जीने अपने यात्रा वर्णन में उज्बेकिस्तान में ताशकन्द विश्वविद्यालय और समरकंद विश्वविद्यालय में भी हिन्दी पढाई जाती है का जिक्र किया है।

महेशचंद्र दिवाकर जी के शोध के अनुसार अधिकांश देशो में आज हिन्दी अध्ययन - अध्यापन और प्रशिक्षण कार्य हो रहा है। हिन्दी की गद्य और पद्य की अनेकशः विधाओ में विदेशी हिन्दी विव्दान और साहित्यकार अपनी रचनाएँ भी कर रहे है। अनेक देशो में उनके आकाशवाणी केद्रो और दूरदर्शन के चैनल्स पर विशेष हिन्दी कार्यक्रम ओर पाठयक्रम चलाये जा रहे है। आज विश्व के ६०० से अधिक विश्व विद्यालयो ओर महाविद्यालय तथा स्कूलो में हिन्दी पढाई जा रही है। अकेले अमेरिका के ही ३३ विश्वविद्यालयो में हिन्दी का अध्ययन व अध्यापन हो रहा है। जर्मनी में भी १४ विश्वविद्यालयो ओर शिक्षण संस्थानो में हिन्दी पढायी जाती है। इस प्रकार हिन्दी अंतर्राराष्ट्रीय स्वरूप ग्रहण करते हुए विश्व भाषा बनने की ओर अग्रेसर है। विश्व बाजार में भारत की बडी भूमिका ने उसे और भी महत्तपूर्ण बना दिया है।

Scanned with Ca

Arts Science & Commerce College Naldurg

आज कई विदेशी भाषा के साहित्यकार हिन्दी भाषा एवं साहित्य के प्रचार - प्रसार प्रशिक्षण के क्षेत्र में उल्लेखनीय है। इनमें से कई साहित्यकारों ने तो हिन्दी में शोधकार्य करके पी.एच. डी की उपाधियाँ भी प्राप्त की है। सोवियत संघ में विश्व में सर्वाधिक हिन्दी सेवी आज भी हिन्दी की सेवा कर रहे है। इनमे प्रवासी भारतीय साहित्यकारो की संख्या तो असंख्य रही है।

भाषा के व्दारा ही किसी राष्ट्र की संस्कृति की पहचान होती है। भारत की स्वतंत्रता तथा धार्मिक सामाजिक उत्थान की दृष्टि से भाषा के क्षेत्र में भारतेन्दु हरिश्चंद्र का प्रयास सराहनीय है -

"निज भाषा उन्नति अहे, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटे न हिय को सूल।।"

उन्होंने इन पंक्तियो में मानव हृदय में हिन्दी भाषा के प्रति प्रेम को जागृत किया। परिणाम स्वरूप इसका प्रभाव भारत से दूर विदेशो में रहनेवाले भारतीयो पर भी पडा। सुभाषचंद्र बोस ने राष्ट्रीय एकता के संदर्भ में हिन्दी के महत्व के बारे में कहा था - प्रांतीय ईर्ष्या व्देश दूर करने में जितनी सहायता हिन्दी प्रसार से मिलेगी उतनी दूसरी चीज से नहीं। हिन्दी विश्व की दूसरे नंबर की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है। आज के युग में उदारवाद, बाजारवाद और वैश्वीकरण (ग्लोबलाइजेशन) का बोलबाला है। हमारा देश ही नही - हमारी भाषा हिन्दी भी इससे आछूती नही रही है। वैश्विक वाणिज्यीकरण के परिणाम स्वरूप हिन्दी भाषा का महत्व दिनोंदिन बढता जा रहा है।

डॉ. महेशचंद्र दिवाकर जी ने नया भारत इस काव्य कृति मे कहां है कि आजादी के पश्चात भारतीय जीवन मे आमुलचूल परिवर्तन हुए है। विकास की चाह ने भारतीय जनजीवन के संस्कारों को भी परिवर्तित किया है यह भी सत्य है कि भारत ने आजादी के पश्चात जिस गति से विकास की धारा प्रवाहित हुई है उससे कही अधिक तीव्रता से भ्रष्टाचार ने भारत के पारिवारिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन पर आक्रमन बोला है। आज जीवन का एक भी क्षेत्र ऐसा नही है जहा भ्रष्टाचार का बोलबाला नही है। भ्रष्टाचार ने सबसे बडा हमला भारत के सांस्कृतिक जीवन पर किया है।

क्योंकि भ्रष्टाचार को सबसे बडा खतरा भारतीय सांस्कृतिक जीवन से है। फलतः उसने आतंक हत्या, लुटपाट और फिरोती को अपना हमजोली बना लिया है। युग - युगो से बना - बनाया हमारा सांस्कृतिक महल जर्जर हो गया है। मानवीय मूल्य विद्रूपताओ के शिकार हो गये है। यद्यपि इस विकटतम, विषमता ग्रस्त माहौल में नया भारत की परिकल्पना मरुद्यान सदृश्य ही है जिसे यदि सहज रूप में संभव न भी किया जाए तथापि अलौकिक रूप में यह संभव भी नही है। यह श्रीराम - कृष्ण, गोतम बुध्द - महावीर, स्वामी विवेकानंद आदि महापुरुषो और महान संतो की भूमि भारत है। यदि इस देवभूमि पर नया भारत नही होगा तो कहाँ होगा।

इसप्रकार हिन्दी का आंतराष्ट्रीय स्वरूप ग्रहण करते हुए विश्व भाषा बनने की ओर अग्रेसर है। विश्व बाजार में भारत की बडी भूमिका मे उसे और भी महत्वपूर्ण बना दिया है। अब वह दिन दूर नही जब हिन्दी अंतर्राराष्ट्रीय भाषा के रूप मे प्रतिष्ठित होगी।

सारांश मे यह कहना पर्याप्त होगा की भाषा के प्रति हमारा दृष्टिकोन अत्यंत उदार होना चाहिए जितनी भारतीय या विदेशी भाषाएँ हम सीख सकें उतना अच्छा है। इस शोधालेख में मैंने अपने कुछ निजी विचार व्यक्त किए है। आपको सुग्राही बनाने का प्रयास किया है। इस प्रकार डॉ. महेश दिवाकर जिके साहित्य साधना के प्रति मुझे यह आलेख लिखने की प्रेरणा मिली है। मुझे विश्वास है कि अब वह दिन दूर नही जब हिन्दी अंतर्राराष्ट्रीय भाषा के पद पर प्रतिष्ठित होगी।

जय हिन्दी। जय भारत।

संदर्भ ग्रंथ :

१. संवेदना के देश में - डॉ. महेश दिवाकर.
२. नया भारत - डॉ. महेश दिवाकर.
३. हिन्दी का वैश्विक परिदृश्य - संपादक - डॉ. महेश दिवाकर, डॉ. करुणा पांडेय, डॉ. मीना कौल.
४. कैप्टन जेम्स कुक के देश में - डॉ. महेश दिवाकर.
५. अंतर्राराष्ट्रीय हिन्दी का स्वरुप - डॉ. भोलानाथ तिवारी.

PRINCIPAL
Arts Science & Commerce College
Naldurg, Dist.Osmanabad-413602

Scanned with Ca